महाकवि गंग

इश्टिकपुरी की इकनौर ग्राम की माँटी में सं0 1495 वि0 में जन्मे महाकवि गंग अकबर के दरवारी कवि थे। अक्खड़ स्वभाव के गंग से क्रोधित बादशाह ने हाथी के पैरों से कुचलवा कर इन्हें परमात्मा के पास भेज दिया। गंग के शब्दों में –

सब देवन को दरवार जुरयो
 तब पिंगल छंद सुनाय कें गायो।
जब कई तें अर्थ कहयो न गयो
 तब नारद एक प्रसंग चलायो।
मृत लोक में है नर एक गुनी
 कवि गंग को नाम सभा में सुनायो।
सुनि चाह भई परमेष्वर कों
 तब गंग को लेन गयन्द पठायो।

महाकवि देव

रीतिकालीन हिन्दी काव्य के सिद्धस्त कवि देवदत्त का जन्म संवत 1730 वि0 में इटावा शहर के मु0 लालपुरा के पास अस्तल में हुआ था।

वृत्त मंजरी अथवा बाग विलास दन्द शास्त्र के प्रणेता महाकवि देव के लगभग 72 ग्रन्थ प्राप्त हो सके हैं जिनमें अश्टयाम, काव्य रसायन, प्रेम चन्द्रिका आदि अत्यन्त लोकप्रिय हैं। प्रे चन्द्रिका से अवतरित छन्द–

कोऊ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहो,
कोऊ कहौ रंड्किन कलंड्किन कुमारी है।
कैसो नरलोक परलोक पर लोकन में,
लीन्हों में अलोक, लोक लोकन ते न्यारी है।
तन जाउ, मन जाउ देव गुरु जन पाउ,
प्रान किन जाइ टेक टरत न टारी है।
वृन्दावन वारी बनवारी की मुकुट वारी
पीत पटवारी वाहि मूरत वे वारी है।।

created using
BCL easyPDF
Printer Driver
Click here to purchase a license to remove this image

पं0 भीमसेन शर्मा

सं0 1911 वि0 को जन्में माँ भारती के इस वरद् पुत्र हिन्दी साहिष्त्य की बहुत सेवा की सं0 1955 वि0 में ''बृाह्मण सर्वस्व'' नामक पत्र इटावा से निकाला। सं0 1969 वि0 में आप कलकत्ता विष्व विद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर नियुक्ति किये गये। जहाँ परास्नातक छात्रों को वेद पढ़ाया करते थे। सं0 1975 वि0 में आपका देहावसान हो गया।

गिरजेश

सं0 1924 वि0 को लखना में जन्में कवि गिरजेश जी का असली नाम मन्नीलाल दीक्षित था आपने अनेक काव्य पुस्ताकों का प्रणयन किया जिनमें **विज्ञान लहरी**', 'ज्ञान विलास' और 'भक्ति चिन्तामणि' काफी लोक प्रिय हुयी।दोहा सवैया और कवित्त छंद के सिद्ध हस्त गिरिजेश जी रचित एक छंद–

देख के सलौने रूप भपहु पसन्द होत
सुरंग नवीन लै दुकूलहि सजावती
नैनन से बैनन से हांसी और बैनन से
गिरिजेश आनन्द अमित उमगावती

मधुसूदन दास,

आप इटावा में मुहल्ला छिपैटी के रहने वाले माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे आपने सं. 1839 में एक बड़ा ही मनोहर प्रबन्ध काव्य ''रामाष्वमेघ'' बनाया जो सब प्रकार से गोस्वामी जी के रामचरित मानस का परिशिष्ट ग्रन्थ होने योग्य है। आप महाकवि देव की ही भांति उच्चकोटि के कवि थे। आपकी कुछ चौपाइयाँ निम्नवत है–

सिय रघुपति–पद कंजपुनीत।
प्रथमहि वन्दन कौ सप्रीता।
मृदु मंजल सुन्दर सब भांती।
ससि–कर–सरिस सुमग नख पांती।

created using
BCL easyPDF
Printer Driver
Click here to purchase a license to remove this image

ला0 नन्दराम अग्रवाल 'रसिक'

सं. 1952 वि0 को इटावा के मु0 कटरा संवाकली में जन्मे 'रसिक' जी ने श्रंगार रस एवं राष्ट्रीय भावों से मुक्त अनेक रचनाएं लिखीं यथा–

निकसी सरोवर नहाय के रमा सी खासी,
चन्द्र सी प्रकासी रूप रासि छवि हाई है।
कारे–कारे केशन सों बारि बिन्दु भाज–भाज,
सुघर उरोजन की शोभा सरसाई हें।
गुम्बज से, गिरि से सलौने और रूरे लखि,
'रसिक' सुजान मन उपमा सुघई है।
कीरत पसारबे कों, जान्हवी समान मानो,
भानु जाने भक्ति भेंट शम्भु पे चढ़ाई है।।

लाल रघुनन्दन सिंह ''लाल''

सं. 1952 वि. को विधूना तहसील में जन्में कवि 'लाल' ने धर्म, भक्ति, ज्ञान, नीति एवं देश प्रेम पर अनूठी रचानाएं लिख हिन्दी साहित्य में इटावा की ओर से अप्रतिम योगदान दिया।

पड़ी रही सम्पत्ति सौ पड़ी रही भुमि यहीं,
पड़ी रही देह बड़ा जिसका गुमान था।
खड़े रहे महल, मतंग, अष्व आदि सब,
पिता–पुत्र, मित्र शक्ति हीन हुए सर्वथा।
छूटि गयी नारी तभी छूटि गयी नारी,
आल छूटि गयी ऐंठ जिसे पाले हुए थे वृथा।
शेष रही कीर्ति, अपकीर्ति ही तम्हारी यहाँ,
कहो याद आती है स्वजीवन की जो कथा।

द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी

आपका जन्म सं. 1934 वि. को फणीन्द्र रामानुजदास जी के घर में हुआ था। आपको हिन्दी ''वरिन हैस्टिग्ज '' नामक ग्रन्थ लिखने के कारण सरकारी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। आपकी 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुयीं। जिनमें''हिन्दी चरिताम्बुधि'' अपने आप में अद्वितीय गन्थ है।

आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रबन्ध मन्त्री रहे। अपने ''वेदिक सर्वस्व'' ''राघवेन्द्र'', ''यादवेन्द्र'' आदि कई समाचार पत्रों का सम्पादन किया। आप 'साहित्य भुषण' तथा 'डाक्टर आफ ओरिएण्टल कल्चर' की पदवियों से विभूषित हुए। आपने हिन्दी बृजभाषा कोष की रचना की।

created using
BCL easyPDF
Printer Driver
Click here to purchase a license to remove this image

छैल बिहारी दीक्षित 'कंटक'

मु0 छिपैटी में क्वार सुदी 12 सं. 1963 वि. को जन्में 'कंटक' जी खड़ी बोली के सफल राट्रीय कवि थे। ओजस्वीर रचनाओं का एक नमुना–

धीरे–2 सर्वनाश की सौरव रचना रचजावे,
आग लगे इस अखिल विष्व में धुँआधार फिर मच जावें।
नाशक शासक सहमें सम्राटों के सिंहासन डोले,
हटे गदिद्‌याँ लुटे खजाने चिर बन्दी बंधन खोले।
अत्याचार भार भू का हो फैले एसी अमिट अशांति
भ्रान्ति दूर हो उथल–पुथल हो क्रान्ति–2 हाक भीषण क्रान्ति।।

शिवदत्त चतुर्वेदी

सं. 1972 वि. में जन्में शिवदत्त जी ने खड़ी बोली एवं बृजभाषा दोनों ही के माध्यम से हिन्दी साहित्य की सेवा की। आपने 'कंचन मृग' देवयानी 'स्वप्न देश' तथा 'विष्व सदन' नामक अनेक रचनाओं का प्रणयन किया। आपने साहित्यिक भाषा वर्षा, कवित्व शैक्ति, इलाहाबाद इत्यादि अनेक लेख पत्रों में प्रकाशित होते रहे। सन् 1963 में आपको राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

शिशुपाल सिंह 'शिशु'

1 सितम्बर सन् 1911 को उदी ग्राम में ठा. बिहारी सिंह के घर में जन्में शिशु जी ने खड़ी बोली काव्य को नये आयाम प्रदान किये 'परीक्षा' 'हल्दी घाटी की एक रात', 'अपने पथ पर', 'नदी किनारे', 'पूर्णिमा', 'दो चित्त', 'वीरजा', इत्यादि काव्य कृतियाँ के प्रणेता शिशु जी ने हिन्दी काव्य मंचों पर इटावा का गौरव 25 अगस्त सन् 1964 को सर्पदंश के कारण चिर निन्द्रा लीन हो गया। उनकी लेखनी का एक नमूना –

उधर लिखा क्षीर सिंधु के अंग उमडते फिरते हैं
इधर दूध की एक बुँद हित सौ–2 आँसू गिरते हैं
उधर भरे पकवान जल रही अकर्मण्यता की धूनी
इधर झोपड़ी विलख रही है अंधियारी, भूखी, सूनी,
किसकी भस्म मलें माथे पर किसका बनकर दहप जलें
दीन बन्धु की ओर चलें या दीन बन्दु की ओ चलें।

created using
BCL easyPDF
Printer Driver
Click here to purchase a license to remove this image